द इन्स्टिट्यूशन ऑफ इन्जीनियर्स (इण्डिया), वल्लभविद्यानगर केन्द्र आणंद द्वारा आयोजित ३२वें सरदार पटेल मेमोरियल लेकचर अंतर्गत ''युवाओं की राष्ट्र निर्माण में भूमिका'' विषय पर माननीय राज्यपाल श्री ओ०पी० कोहली जी का व्याख्यान (१५ मार्च, २०१७)

- मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे ३२वें सरदार पटेल मेमोरियल लेक्चर देने के लिए यहां Institute of Engineers (India) द्वारा आमंत्रित किया गया है। यह प्रसन्नता की बात है कि यह भाषण देश के महान सपूत सरदार पटेल की स्मृति में आयोजित किया गया है। सरदार पटेल दो बातों के लिए विशेष रूप से जाने जाते हैं। उन्होंने बड़े-बड़े किसान आन्दोलन का संगठन किया और उसे नेतृत्व दिया । दूसरा उनका महान काम देश की रियासतों का स्वतंत्र भारत में विलीनीकरण का था। ये दोनों काम अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धियाँ थीं। आप कल्पना कर सकते हैं कि यदि सरदार पटेल ने भारत की करीबन ५५० रियासतों को स्वतंत्र भारत में विलीन न किया होता तो आज हमारे देश का नक्शा

कैसा होता। ऐसे महान राष्ट्रवादी नेता और देश भक्त सरदार पटेल की स्मृति में आयोजित उन्हीं की भूमि में स्थित संस्था में मुझे आमंत्रित किया गया है, यह भी अति प्रसन्नता की बात है।

- आज के भाषण का विषय है राष्ट्रनिर्माण में युवाओं का योगदान । किसी भी राष्ट्र के लोगों के दिल में यह भावना जगे कि मेरा राष्ट्र परम वैभव को प्राप्त हो, यह बात बहुत ही स्वभाविक है। देश में जब आज़ादी का आन्दोलन चल रहा था तब देश के लोगों के सामने हमारे प्रबुद्ध नेताओं ने दो लक्ष्य रखे थे। एक लक्ष्य था ब्रिटिश सत्ता से भारत को आज़ादी दिलाना। दूसरा लक्ष्य था आज़ाद भारत को नये सिरे से निर्मित करना एवं विकसित करना। दूसरे शब्दों में कहें तो नये भारत का निर्माण करना। जब १५ अगस्त १९४७ को देश ब्रिटिश हुकूमत की जंजीरों से मुक्त हुआ, तब पहला लक्ष्य तो पूर्ण हो गया, भले ही यह अलग बात है कि जो स्वतंत्रता हमें मिली वह खंडित स्वतंत्रता थी। १५ अगस्त, १९४७ को योगी अरविंद का एक भाषण All India Radio से प्रसारित किया गया था, जिसमें योगी अरविंद ने कहा था कि देश को

स्वतंत्रता तो प्राप्त हुई है, मगर देश खंडित हो गया है और इस खंडित भारत को अखण्ड भारत के रूप में जब तक परिवर्तित नहीं किया जायेगा तब तक हम यह मानेंगे कि यह काम अधूरा है। अर्थात् देश की आज़ादी प्राप्त होने पर भी कुछ महानुभाव ऐसे थे जिन्हें अब भी लगता था कि काम अधूरा हुआ है और अभी शेष बहुत कुछ करने को बाकी है। पूज्य महात्मा गांधीजी की एक पुस्तक है– ''India of My Dreams'' यानि 'मेरे सपनों का भारत ।' उस पुस्तक में गांधीजी ने कहा है कि देश स्वतंत्र हुआ ऐसा मैं तब मानूँगा जब देश से तीन चीजें दूर हो जाएँगी–निर्धनता, निरक्षरता और विषमता।

- आज हम आज़ादी के ७० वर्ष के बाद आज की स्थिति की समीक्षा करते हैं तो क्या हम यह कह सकते हैं कि देश से निर्धनता समाप्त हो गई है। क्या निरक्षरता खत्म हो गई है या क्या विषमता दूर हुई है। हम यदि अपने चारों तरफ नज़र फैलाएँ तो हमें दिखाई देता है कि आज भी निर्धनता है, निरक्षरता भी और विषमता भी है। लगता है कि गांधीजी के सपनों के भारत का निर्माण

तो अब तक नहीं हुआ। यह काम अधूरा पड़ा है।

- सुभाषचन्द्र बोस की एक पुस्तक है–''तरूणाई के सपनें''। उस पुस्तक में उन्होंने स्वतंत्र भारत की अपनी कल्पना की थी। उस कल्पना का भारत आज हमें कहीं भी दिखाई नहीं देता। मैंने इस बात का जिक्र इसीलिए किया कि इन तीनों महापुरूषों –महात्मा गांधी जी, योगी अरविंद और सुभाषचन्द्र बोस–ये तीनों भारत को ब्रिटिश सत्ता से मुक्त करवाने के संघर्ष के प्रमुख नेता थे। उन्होंने स्वतंत्र भारत के बारे में जो कल्पना की थी और जो स्वप्न देखा था, वह स्वप्न अभी भी पूरा होना बाकी है। तो हमारे युवाओं के लिए यह काम निकलता है कि वे हमारे महान नेताओं के अधूरे सपनों को पूरा करें। हमारे युवाओं को यह बात ध्यान में रखनी होगी कि अखण्ड भारत का स्वप्न कभी–न–कभी तो साकार होना चाहिये।

- गरीबी निर्मूलन के संदर्भ में सरकार की तरफ से तो प्रयत्न किये जाते हैं। सरकार के इन्हीं प्रयत्नों के साथ हमारे युवाओं

को विकास कामों में भागीदारी करनी पड़ेगी । निरक्षरता निवारण के जो कार्यक्रम सरकारी स्तर पर चल रहे हैं, उनमें भी इन्हें सहभागीदारी करनी पड़ेगी। सरकार तो अपनी तरफ से प्रयत्न करती है, मगर इसके अतिरिक्त गैर–सरकारी स्तर पर भी प्रयत्न करके हमारे युवा राष्ट्र निर्माण के कार्यक्रम में सहभागी बन सकते हैं।

- जब देश आज़ाद हुआ तब मैं १० या १२ वर्ष की आयु का था। तब हम सुनते थे कि दुनिया के कुछ देश विकसित हैं– अमेरिका, पश्चिमी युरोप इत्यादि और कुछ देश विकासशील है, जैसे की भारत। युरोपियन देशों को developed countries कहा जाता था और भारत को developing country कहा जाता था । विकासशील देश से विकसित देश की कक्षा में भारत को ले जाना, यह लक्ष्य हमने अपने सामने रखा था। आज हम स्वतंत्रता प्राप्ति के ७० वर्ष पूरे होने पर भी भारत को विकसित देश नहीं कह सकते । हमारे युवा वर्ग के सामने दूसरा महत्त्वपूर्ण काम यह है कि हम अपने

विकासशील राष्ट्र को विकसित राष्ट्र बनायें। यदि भारत को हम पूरे विश्व में एक बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में देखना चाहते हैं तो इस दिशा में भी हमारे युवाओं को प्रयत्नशील बनना पड़ेगा। हम हमारे एशिया उपखण्ड की बात करें तो हमें दिखाई देता है कि दो उभरती हुई अर्थव्यवस्थाएँ हैं–एक चीन की और दूसरी भारत की। इन दो व्यवस्थाओं के बीच स्पर्धा चल रही है कि कौन–सी अर्थव्यवस्था आगे बढ़ सकती है। आज यदि देखा जाये तो भारत एक ऐसा देश है जिसमें ५० प्रतिशत से अधिक आबादी नवजवानों की है। इसे अर्थशास्त्र की भाषा में demographic dividend कहा जाता है। बहुत सारे देश ऐसे हैं जहाँ बड़ी उम्र के लोग बड़ी संख्या में है। इनकी तुलना में भारत देश में युवाओं की संख्या बहुत बड़ी है। ऐसी स्थिति में हमारे युवाओं के सामने एक और चुनौती यह भी है कि हम चाईना से कैसे आगे बढ़ें।

- हमारा देश १९४७ में आज़ाद हुआ था और देश के आज़ाद होते ही हमें लोकतंत्र प्राप्त हो

गया। बहुत से देश ऐसे हैं जिन्हें लोकतंत्र पाने के लिए संघर्ष करना पड़ा था। १९५२ में पहला चुनाव हुआ था और तभी से नियत समय पर चुनाव होते हैं । सत्ता परिवर्तन होता रहता है तथा किसी खून खराबे के बिना, किसी रक्तपात के बिना, किसी हिंसा के बिना, हमारे यहां की सरकारें परिवर्तित होती रहती हैं। केन्द्र में भी और राज्यों में भी । इस स्थिति को हम अपने देश में लोकतंत्र की सफलता कह सकते हैं और बड़े गर्व के साथ यह कहा जा सकता है कि भारत में दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है जहां चुनाव के माध्यम से बिना किसी हिंसा और बिना किसी खून खराबे के सत्ता परिवर्तन होते रहते है और लोग इन्हें स्वीकार कर लेते हैं। तो इस दृष्टि से देखें तो हमारे लोकतंत्र में बहुत अच्छी बातें हैं। मगर दूसरी तरफ कुछ कमियां भी हैं। इन कमियों को दूर करने की जिम्मेदारी हमारे देश के युवावर्ग अपने कंधे पर ले सकते हैं। सफल लोकतंत्र के लिए लोक शिक्षण बहुत जरूरी है, जिसके अभाव में राजनैतिक दलों के लिए जनता को गुमराह करना

आसान हो जाता है। हमारे राजनैतिक दल जनता को गुमराह न कर सकें तथा जनता सोच विचार करके अपने मत का प्रयोग करे इसके लिए भी लोगों का शिक्षण लोकतंत्र में आवश्यक है। यह भी हमारे युवाओं के लिए एक बड़ी चुनौती है। हमारे युवा लोक शिक्षण की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले सकते हैं।

- आज़ादी के बाद हम जिन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, उन चुनौतियों में भ्रष्टाचार यानि कि सार्वजनिक जीवन में स्वच्छ व्यवहार का अभाव अपने आप में बड़ी चुनौती है। इस भ्रष्टाचार के विरूद्ध लड़ने के लिए आम जनता को संगठित करने का काम भी हमारे देश की युवाशक्ति कर सकती है। यह काम भी राष्ट्र निर्माण का ही कार्य है। युवा आगे आएँ और इस क्षेत्र में अपना योगदान दें तो यह बहुत बड़ा काम हो सकता है। तीन प्रकार के कार्य है, जो समाज में बदलाव ला सकते हैं। आंदोलनों के जरिये समाज में tbदीली आ सकती है। रचनात्मक कार्यों के जरिये भी tbदीली आ सकती है। सरकार की नीतियों के कारण भी समाज में परिवर्तन आ

सकता है। अब ये तीनों क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें युवा भागीदारी की बहुत जरूरत है। बड़े–बड़े सामाजिक मुद्दों के लेकर, आर्थिक या सामाजिक मुद्दों को लेकर बड़े आंदोलन हमारे देश में नहीं होते। मगर आज परिस्थिति का तकाज़ा यह है कि समाज परिवर्तन के लिए हमारे युवा आर्थिक एवं सामाजिक मुद्दों को लेकर रचनात्मक ढंग से आंदोलनों का शुभारंभ करें।

- हमारे देश में शहरों एवं गांवों के बीच बहुत बड़ा अंतर हो गया है। देश में गरीबी है, पिछड़ापन है, अशिक्षा है, निरक्षरता है, सामाजिक बुराईयां हैं। संविधान जिन चीजों की गारंटी देता है, उन सभी चीजों को करने के लिए हमे रचनात्मक कार्यक्रमों की जरूरत है और इसे करने के लिए हमें कर्तव्यनिष्ठ युवाओं की जरूरत है।

- एक शिकायत यह भी हमारे युवा careerist हैं । carriorist वह है जो अपनी सोचते हैं, जिन्हें अपनी कारकीर्दी की चिंता है, जिन्हें समाज की चिंता नहीं, देश की चिंता नही है। स्वकेन्द्रित

दृष्टिकोण वाले ऐसे कई युवा आज हमारे बीच हैं। हमारे युवाओं को इस परिस्थिति से बाहर आना होगा। उपभोक्तावादी मानसिकता से बाहर आना होगा।

- मैंने कहीं राम कृष्ण मिशन के स्वामी रंगनाथानंद जी का एक लेख पढ़ा था, जिसमें उन्होंने कहा था कि हमारे युवा Professionally Competent तो हो रहे हैं लेकिन Emotionally Competent नहीं हैं। यह बात मैं एक उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करना चाहूँगा।

- एक बार काका कालेलकर ने महात्मा गांधी जी से पूछा था–''बापू ! आपको सबसे अधिक वेदना किस चीज से होती है?'' गांधी जी कुछ क्षण के लिए रूके और फिर बोले कि जब मैं पढ़े–लिखे लोगों में करूणा की भावना को सूखता हुआ देखता हूँ तब मुझे सबसे अधिक पीड़ा होती है। व्यक्ति चाहे कितना भी पढ़े–लिखे, चाहे कितनी भी शिक्षा प्राप्त कर ले, मगर उसके मन में किसी के प्रति करूणा और संवेदना की भावना ही सूख जाय तो इससे अधिक पीड़ादायक और कुछ

भी नहीं हो सकता। यही वेदना स्वामी रंगनाथानंद ने व्यक्त की थी कि हमारे युवा Professionally Competent बनने के साथ-साथ Emotionally Competent जरूर बनें। यही बात हमारे भक्त कवि नरसिंह मेहता ने कही थी कि वही सच्चा वैष्णवजन है जो परपीड़ा का अनुभव कर सकता है। हम चाहे कितना ही पढ़े-लिखे हों, कितना भी आगे निकल जायें, मगर यदि हमारे भीतर मानवता नहीं है तो सबकुछ बेकार है।

- मैं एक दूसरे शbद के बारे में कहना चाहता हूँ और यह शbद है- धर्म । यूं तो यह शbद बड़ा विवादित है, लेकिन इसकी बहुत सीधी परिभाषा तुलसी दास जी ने रामचरित मानस में की है। उन्होंने कहा है कि धर्म का अर्थ है परहित, अधर्म का अर्थ है परपीड़ा। उन्होनें कहा था-

''परहित सरिस धर्म नहिं भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।''

जिसका मतलब है कि परोपकार के समान कोई धर्म नहीं और दूसरों को पीड़ा देने

के समान कोई अधर्म नहीं है। दूसरे शbदों में कहें तो परमार्थ ही धर्म है। उसका अर्थ होता है दूसरों का हित करना। केवल अपनी ही चिंता न करना। इसी को धर्म कहते हैं। धर्म न करने का मतलब है परोपकार करने से दूर रहना। आज हमारे युवा जीवनमूल्यों से हटते जा रहे हैं। इसके लिए जरूरी है कि हमारे युवाओं को जीवनमूल्यों की शिक्षा दी जाये। अंग्रेजी में इसे Values कहते हैं। क्या मूल्यवान है और क्या मूल्यवान नहीं है, इसका विवेक करना यदि हमारे युवा सीख जायें तो वह अपने आप में बड़ी बात है। तुलसीदास के रामचरित मानस में एक प्रसंग है। कहा जाता है कि रघुवंश के लोग वचनपालन के लिए जाने जाते थे।

''प्राण जाये पर वचन न जाये ''

राजा दशरथ यदि चाहते तो वचन का पालन छोड़ सकते थे। वह कह सकते थे कि उन्होंने जिस परिस्थिति में वचन दिया होगा, वह अलग स्थिति थी, उसका पालन करना ज़रूरी थोड़ा ही है। मगर तुलसीदासजी लिखते हैं–

''रघुकुल रीति सदा चली आई,
प्राण जाय पर वचन न जाई।''

राजा दशरथ को तुरंत याद आया कि उनके वंश की परंपरा है कि प्राण जाता है तो जाये पर वचन नहीं टूटना चाहिये। इस संदर्भ में जब हम देखते हैं कि हमारे युवावर्ग जीवनमूल्यों से दूर होते जा रहे हैं तो हमें दु:ख होता है और लगता है कि हमारी युवापीढ़ी को जीवनमूल्यों से जोड़ने की जरूरत है।

- इस संदर्भ में मैं परमार्थ के बारे में कुछ कहना चाहूँगा। आज के समय में परमार्थ का यदि कोई काम है तो वह है समाज सेवा। संत कबीर का एक दोहा है जिसमें उन्होंने परमार्थ का जिक्र करते हुए कहा है–

''तरूवर सरवर संत जन,
चौथा वरसे मेघ ।
परमार्थ के कारणे,
चारो धारे देह ।।''

इसका अर्थ है कि वृक्ष अपनी छाया को अपने }पर नहीं ओढता। अपनी डालियों, अपने पत्ते, अपने फलों, अपनी लकड़ी का अपने लिए उपयोग नहीं करता। वह पथिकों को साया देता है। फल देता है। इस दृष्टि से वह अपने लिए नहीं जीता, वह परमार्थ के लिए जीता है।

सरवर, तलाब, नदी इत्यादि अपना जल स्वयं नहीं पीते। वे अपना जल दूसरों को देते हैं। दूसरों के लिए जीते हैं। मेघ बरसते हैं, मगर उनका जल समस्त सृष्टि के लिए है। इस दृष्टि से देखें तो जीवन की सार्थकता परमार्थ में है। यदि हमारे युवा राष्ट्रनिर्माण में सही योगदान देना चाहते हैं तो उनको परमार्थ की राह पकड़नी होगी।

- जीवन में हमारे उपर कई ऋण है, जिनसे मुक्त होना हमारा धर्म बन जाता है। देवऋण, पितृऋण, ऋषिऋण तथा राष्ट्रऋण। इन ऋणों से मुक्त होकर ही हम अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं। हमारे युवाओं को राष्ट्रऋण या समाज ऋण अदा करना चाहिये और अपने कर्तव्यों का पालन करके इन ऋणों से मुक्त होना चाहिये।
- देश की आज़ादी के लिए जब संघर्ष हो रहा था, तब एक प्रकार की परिस्थितियाँ थीं। उस वक्त युवाओं से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे आत्म बलिदान करें।। सबसे बड़ा राष्ट्रहित का काम उन दिनों यह माना जाता था कि युवा लोग राष्ट्र के हित में अपने प्राणों की आहुति दें। आज परिस्थिति अलग है।

देश की आज़ादी के लिए प्राणों का बलिदान देने की आवश्यकता नहीं है। मगर हमारे युवा अपना समय, अपनी क्षमता, अपने सामर्थ्य के द्वारा समाज सेवा के जरिये बहुत कुछ कर सकते हैं।

- स्वामी विवेकानन्द जी ने युवाओं का आह्वाहन किया कि जब तक अपने लक्ष्य की प्राप्ति न कर लो तब तक आप विश्राम न करें। युवाओं से उनको बड़ी अपेक्षाएँ थी। वह चाहते थे कि युवाओं को ऐसी शिक्षा दी जाये जिससे वे सही अर्थ में मानव बन सकें।

- एक और शब्द का प्रयोग मैं करना चाहूँगा और वह है ''अन्त्योदय ।'' पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी ने इस शब्द का प्रयोग अपनी रचनाओं में खूब किया है। उनका मानना था कि अन्त्योदय का अर्थ यह है कि समाज में जो सीढ़ी पर सबसे नीचे है, उसकी चिंता हम करें और सीढ़ी पर जो सबसे उपर है मात्र उसकी चिंता हम न करें। पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी कहते थे कि हमारा दृष्टिकोण अन्त्योदय का होना चाहिये। इसका अर्थ है कि विकास की सीढ़ी पर

जो सबसे नीचे है, उसके प्रति हमारा ध्यान जाना चाहिये। ऐसे लोगों के लिए हम कुछ कर सकें, अपना कुछ दे सकें, समर्पित भाव से तो वही सच्चा अन्त्योदय है। इसी अन्त्योदय की भावना को नरसिंह मेहता ने अपने तरीके से, गांधीजी ने अपने तरीके से तथा दीनदयाल उपाध्यायजी अपने तरीके से कहा था।

- आज आवश्यकता है युवाओं में परिवर्तन लाने की। आज के हमारे युवा उपभोक्तावाद या consumerism के चक्कर में फंस गये हैं। आज आवश्यकता इस बात की है हमारे युवा हमारी संस्कृति से जुड़ें। हमारे देश की जड़ों से जुड़ें। हमारी प्राचीन परंपराओं से जुड़ें, जिससे उनमें देश के प्रति स्वाभिमान जागे और वे रचनात्मक कार्यों में लगें तथा उन अधूरे कार्यों को पूरा करें जिसके बारे में पूज्य महात्मा गांधी जी ने ''मेरे सपनों का भारत'' पुस्तक में लिखा था। आजे इस देश की ५० प्रतिशत से अधिक आबादी युवाओं की है। हमारे देश के पास एक बहुत बड़ा अवसर है। यदि यह अवसर हमने गंवा दिए तो यह अवसर दोबारा हमारे पास आएगा नहीं। आवश्यकता

इस बात की है कि हमारे युवा देश को विकसित राष्ट्र बनाने के रचनात्मक कार्यों में लग जायें।

- आज सरदार पटेल की स्मृति में यह व्याख्यान आयोजित हुआ है। हम सभी सरदार पटेल के जीवन से समर्पण की सीख ले सकते हैं। ऐसे महान पुरूष के जीवन से प्रेरणा लेकर हमारे देश के युवा देश के नवनिर्माण में अपने आपको समर्पित करें । यह क्षमता हमारे युवाओं में है।

धन्यवाद । जय हिन्द।